श्रै et cf. श्री, 1. चुर्, slav. зрѣти *ζrje-ti* maturescere, fortasse gr. *ἄρ-τος* e *κάρ-τος* per metath. e *κρά-τος* = part. pass. Vêd. श्रात; *κάγχρυς* forma redupl. pro *κάρχρυς* (v. gr. 570.); goth. *hauri* pruna; fortasse lat. *cul-ina*, mutato *r* in *l*. Ad formam Caus. श्रपयामि trahi possunt hib. *cramhaim* «I concoct, digest», *mh* = *v* pro *p*, v. Pictet p. 60. et 69.; lat. *cremare, carbo*, gr. *κρίβανος, κριβάνη, κράμβος*; goth. *hlaif-s*, them. *hlaiba*, nostrum *Laib*, anglo-sax. *hlâf*; lith. *isz-sirpstu* maturesco, gr. *περκάζω*; germ. vet. *rîfi* maturus, nostrum *reif*, anglo-sax. *ripe*, abjectâ gutturali, v. पक्क maturus a पच् coquere; fortasse gr. *καρπός* et germ. vet. *herpist* autumnus, anglo-sax. *hearfest* a maturescendo dicta sunt. Cf. Pott. I. 196. et Benfey II. 177.)

श्राद्ध *n.* (a श्रद्धा s. श्र) donum sacrum quod Manibus offertur. Man. 3. 204.

श्रान्त v. श्रम्.

श्राम् 10. *P.* (आमन्त्रणे *K.* मन्त्रे *V.*) loqui, alloqui, advocare, invitare.

श्रि 1. *P. A.* ire, adire, inire, ingredi. Hit. 26. 5.: यन् देशं श्रयते (वीरः) तम् एव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्; Ragh. 3. 70.: मुनिवनतरुच्छायाम्... शिश्रिये; Bh. 9. 12.: प्रकृतिम् मोहिनीं श्रिताः. (Cf. चुर्; germ. vet. *hlei-tara* scala, anglo-sax. *hlæ-dre, hlæ-der*, nostrum *Leiter*, v. Graff. IV. 1115.; goth. *hlei-thra* tabernaculum, *hlija* id., cf. आश्रय et vid. वेश domus a विश् intrare; lith. *klê-tis* cella in supremâ parte aedium; slav. *klje-tj* cella; germ. vet. *hlinian, hlinôn, hhlinên* se acclinare, inniti - v. श्रि praef. सम्-, *oba-hlinên* excellere, *fora-hlinên* praeminere; *hlî-ta* declivitas, v. Graff IV. 1094. sq.; *scrîtan* gradi, v. gr. comp. 109b). 1.; *ga-scrîtan* delabi; *scrit*, island. vet. *skrid* passus; lith. *klejoju* oberro, pervagor, *klystu* e *klydtu, klydêju* id.; gr. *κλί-νω, κλι-τύς, κλισία* cet.; lat. *clî-no, clivus*, v. श्रि praef. उद्.

c. अधि praef. सम् adire, aggredi. N. 23. 12.

c. अभि *id.* Mah. 1. 8274.: भयाद् रणम् परित्यज्य शक्रम् एवा 'भिशिश्रियुः.

c. आ 1) *id.* N. 12. 12.: शिलातलम् अथा ''श्रिता; H. 2. 11.: वनम् आश्रिताः; Mah. 3. 13069.: आश्रयिष्यन्ति च नदीः पर्वतान् विषमाणि च. *Pass.* Hit. 70. 7.: स लक्ष्म्या ''श्रीयते जनः. 2) propendere, se convertere, addictum, intentum esse. H. 1. 41.: धर्मम् आश्रिता; 3. 19.: यान् इमान् आश्रिता 'कार्षीर् विप्रियं सुमहन् मम; N. 6. 8.: काच सर्वगुणोपेतन् ना ''श्रयेत नलम्; Bh. 6. 1.

c. आ praef. अनु adire. R. Schl. II. 84. 7.

c. आ praef. अप *id.* Mah. 3. 13238, 39. Adhibere. Mah. 1. 651.: आहारम् अनपाश्रित्य न शरीरस्य धारणम्.

c. आ praef. वि + अप *id.* Bh. 9. 32.

c. आ praef. उप *id.* H. 1. 44. Bh. 4. 10.

c. आ praef. सम् *id.* H. 2. 1.

c. उद् उच्छ्रि (v. euphon. r. 61.) extollere, sublevare. Sa. 5. 95.: उच्छ्रित्य बाहू. — उच्छ्रित erectus, sublatus. N. 12. 37.

c. उद् praef. अभि *id.* Dr. 8. 20.: गजवरम् अभ्युच्छ्रितकरम्.

c. उप adire, aggredi. Mah. 3. 10456.: शराः ... अभेद्यङ्कवचश्चै 'व सद्यस् तम् उपशिश्रियुः.

c. निस् praef. वि egredi. Sa. 6. 14.: वक्त्राद् वाक्यं विनिःश्रितम्.

c. प्र प्रश्रित modestus. In. 1. 10.: सन्नतः प्रश्रितो भूत्वा; R. Schl. I. 18. 5.: प्रश्रितं वाक्यम्. *Vid.* प्रश्रय.

c. प्र praef. सम् सम्प्रश्रित i. q. प्रश्रित. R. Schl. II. 70. 11.: ऊचुः सम्प्रश्रितं वाक्यम्.

c. सम् 1) *i. q. simpl.* Mah. 3. 13053.: तान् देशान् संश्रयिष्यन्ति. 2) se acclinare *in aliquid*, niti *aliquâ re, c. acc.* R. Schl. II. 60. 20.: बाहू रामस्य संश्रिता; 66. 10.: सत्वरस्ता राघवं संश्रयिष्यति.

श्रित v. श्रि et श्रा.

श्रिष् 1. *P.* (दाहे) urere. (*Cf.* श्लिष्, 1. श्री, श्रा, ग्रीष्म.)

1. श्री 9. *P. A.* coquere. Rigv. 84. 11.: सोमं श्रीणन्ति; 68. 1.: श्रीणान्. (*Vid.* श्रिष्.)

2. श्री *f.* 1) dea *Lakschmia, Vischnûs* uxor. N. 1. 13. 2) for-